N.E.W. SEMINARY उपदेश सामग्री

# परमेश्वर का निरंतर पीछा करने वाला प्रेम और अन्यजातियों का उद्धार

पास्टर हून किम, 11 अक्टूबर 2026, योना 1:4-17

पास्टर हून किम योना 1:4–17 के ईश्वरीय विरोधाभास को स्पष्ट करते हैं, और दिखाते हैं कि कैसे इस्राएल की हठीली अवज्ञा ने अन्यजाति मल्लाहों के लिए उद्धारकारी दया का एक अप्रत्याशित द्वार खोल दिया। मल्लाहों की मानवीय व्यावहारिक समझ से पवित्र भय तक की यात्रा की जाँच करते हुए, यह प्रवचन विश्वासियों को आत्म-धर्मी घमंड त्यागने और परमेश्वर के सार्वभौम अनुग्रह के पूर्ण समर्पण में आने का आह्वान करता है।

N.E.W. Church के पास्टर हून किम की शिक्षा। AI की सहायता से कोरियाई से अनुवाद किया गया। पूरी जाँच से पहले 11 नवंबर 2026 को साझा किया गया।

सुनने, डाउनलोड करने और साझा करने के लिए निःशुल्क: newexodusseminary.org/hi/2026-10-11-new-jonah-1-the-hound-of-heaven-and-the/

एक नज़र में · शिक्षा के नोट्स · पवित्रशास्त्र मार्गदर्शिका · शब्द अध्ययन · स्थान और समयरेखा · शिक्षा की रूपरेखा · अध्ययन मार्गदर्शिका · प्रार्थना · दोहराने के प्रश्न · तीन मिनट में · एक सप्ताह के WhatsApp संदेश

---

## स्लाइड

- स्लाइड 1: परमेश्वर का निरंतर पीछा करने वाला प्रेम और अन्यजातियों का उद्धार
- स्लाइड 2: सुसमाचार का विरोधाभास: अवज्ञा और अनुग्रह
- स्लाइड 3: तूफान में चार प्रतिक्रियाएं
- स्लाइड 4: शब्द अध्ययन: Chatar (חָתַר)
- स्लाइड 5: मुख्य वचन: योना 1:14
- स्लाइड 6: पवित्र भय की वृद्धि: Gadol

---

## एक नज़र में

### एक नज़र में: स्वर्ग का खोजी परमेश्वर और अन्यजातियों का उद्धार

- **शीर्षक (कोरियाई):** 하늘의 사냥개와 이방인의 구원 (मूल उपदेश शीर्षक: 본문 낭독과 복음의 역설: 요나의 불순종과 이방인의 구원)
- **शीर्षक (अंग्रेज़ी):** The Hound of Heaven and the Salvation of the Outsiders
- **प्रचार की तिथि:** 11 अक्टूबर, 2026
- **मुख्य पद:** योना 1:4–17
- **मूल सत्य:** परमेश्वर अपने निरंतर पीछा करने और मानवीय अवज्ञा के टकराव का सार्वभौमिक रूप से उपयोग करते हैं ताकि अन्यजाति बाहरवालों को जगा सकें, और उन्हें स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति और धार्मिक आत्मनिर्भरता से निकालकर सच्चे भय, प्रार्थना और आराधना में ले आएं।

## सारांश

योना 1:4–17 पर इस तीसरे संदेश में, पास्टर हून किम इस ईश्वरीय विरोधाभास को स्पष्ट करते हैं कि कैसे इस्राएल का विद्रोह अन्यजातियों के लिए उद्धार का द्वार खोलता है। ठीक जैसे आधुनिक चिकित्सा अक्सर अनपेक्षित दुष्प्रभावों के माध्यम से जीवन बदलने वाली खोजें करती है, वैसे ही योना और परमेश्वर के बीच का हठीला टकराव अप्रत्याशित रूप से अन्यजाति मल्लाहों के दल को उद्धारकारी विश्वास में ले आता है। इन मल्लाहों की आत्मिक यात्रा का विवरण देते हुए, पास्टर किम दिखाते हैं कि कैसे परमेश्वर मानवीय व्यावहारिक समझ, अंधविश्वासी धार्मिकता और आत्म-धर्मी नैतिक अंतरात्मा को तब तक तोड़ते हैं जब तक कि परमेश्वर की सार्वभौम इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण के अलावा कुछ नहीं बचता। अंततः, यह वृत्तांत रोमियों 9–11 में समझाए गए सुसमाचार के रहस्य की पूर्वछाया प्रस्तुत करता है, जो आज के विश्वासियों को अपने गहरे घमंड को त्यागने और सच्चे आराधकों के रूप में जीने का आह्वान करता है जो केवल जीवित परमेश्वर का भय मानते हैं।

## मुख्य भाग

1. **सुसमाचार का विरोधाभास और अन्यजातियों का उद्धार** (본문 낭독과 복음의 역설: 요나의 불순종과 이방인의 구원): अनुग्रह का अप्रत्याशित लाभ, जहाँ इस्राएल की हठीली अवज्ञा दवा के उन दुष्प्रभावों के समान है जो अन्यजाति बाहरवालों के लिए चंगाई लाते हैं।
2. **व्यावहारिक समझ की प्रतिक्रियाओं से विश्वास की प्रतिक्रिया की ओर बढ़ना** (상식적인 반응에서 믿음의 반응으로): परमेश्वर द्वारा भेजे गए तूफान को शांत करने में मानवीय विशेषज्ञता और समुद्री व्यावहारिक समझ की विफलता, जो विश्वासियों को उनके सम्मुख दंडवत होने के लिए विवश करती है।
3. **सच्चे परमेश्वर को जानने के लिए धार्मिक प्रतिक्रियाओं से परे जाना** (종교적 반응을 넘어 참되신 하나님을 알기까지): अंधविश्वासी, भाग्य तलाशने वाले प्रयासों (चिट्ठियां डालना) से आगे बढ़कर स्वर्ग और समुद्र पर शासन करने वाले व्यक्तिगत परमेश्वर के आदरपूर्ण भय में प्रवेश करना।
4. **सच्चे पश्चाताप और आज्ञाकारिता की प्रार्थना के लिए अंतरात्मा का टूटना** (양심의 반응을 깨뜨리는 참된 회개와 순종의 기도): आत्म-धर्मी नैतिकता का सामना करना, मानवीय प्रयासों को छोड़ना, और पूर्ण समर्पण में पुकारना: "हे यहोवा, जैसा तूने चाहा वैसा ही किया भी है।"
5. **सच्चे आराधकों का जन्म और मसीह का सुसमाचार** (참된 예배자의 탄생과 예수 그리스도의 복음): पवित्र भय, बलिदानों और मन्नतों में मल्लाहों की आत्मिक यात्रा की पराकाष्ठा, जो यीशु मसीह की

सर्वोच्च आज्ञाकारिता और अन्यजातियों तथा इस्राएल दोनों के उद्धार की ओर संकेत करती है।

---

# शिक्षा के नोट्स

## शिक्षण टिप्पणियाँ

### 1. ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

- **समुद्री व्यापार और बहुदेववाद**: भूमध्य सागर से तर्शीश जाने वाले जहाजों में विभिन्न जातीय पृष्ठभूमियों और संरक्षक देवताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले अंतरराष्ट्रीय दल सवार होते थे (योना 1:5)। संकट के समय, मल्लाह अपने-अपने क्षेत्रीय या मौसमी देवताओं की दोहाई देते थे।
- **नरबलि की परंपराएं**: पास्टर किम ने उस प्राचीन अन्यजाति मानसिकता पर प्रकाश डाला जिसमें घातक तूफानों के दौरान मनमौजी समुद्री देवताओं को शांत करने के लिए नरबलि दी जाती थी। उन्होंने इसे व्यापक लोककथाओं से जोड़ा, जैसे कि कोरियाई लोककथा *शिमचोंगे* (심청전), जिसने अपने पिता की दृष्टि लौटाने और समुद्री आत्माओं को शांत करने के लिए खुद को इनदांग्सू समुद्र में फेंक दिया था। योना 1:14 में यहोवा से प्रार्थना करते समय मल्लाहों ने विशेष रूप से इस लेन-देन वाली, क्रूर अन्यजाति रीति को अस्वीकार कर दिया, और विनती की कि योना को फेंकना हत्या या अन्यजाति तुष्टीकरण न गिना जाए।
- **शकुन-विद्या और चिट्ठियां डालना**: ईश्वरीय इच्छा जानने के लिए चिट्ठियां डालना (योना 1:7) प्राचीन निकट पूर्व में एक स्वीकृत प्रथा थी। यद्यपि यहाँ यह अन्यजाति संदर्भ में था, फिर भी परमेश्वर ने सार्वभौमिक रूप से योना को अलग करने के लिए परिणाम को निर्देशित किया।

### 2. स्थान और भूगोल

- **भूमध्य सागर**: इसे केवल निष्पक्ष प्रकृति के रूप में नहीं, बल्कि यहोवा के सार्वभौम अधिकार क्षेत्र के रूप में चित्रित किया गया है। जहाँ योना ने सोचा था कि वह इस्राएल देश को छोड़कर यहोवा की उपस्थिति से भाग सकता है, वहीं यहोवा ने खुले समुद्रों पर अपने प्रभुत्व को सिद्ध कर दिया।
- **नीनवे**: नव-असीरियन साम्राज्य की क्रूर राजधानी जहाँ योना जाने से इनकार कर रहा था, और इस्राएल के कट्टर शत्रु को दया का संदेश देने के बजाय समुद्र में शारीरिक मृत्यु को चुन रहा था।

### 3. मूल भाषा की अंतर्दृष्टियां

- **तूफान का मानवीकरण (योना 1:4)**: इब्रानी पाठ जहाज का वर्णन करता है मानो वह टूटने का "विचार" या "योजना" कर रहा हो (חִשְּׁבָה לְהִשָּׁבֵר, *chissebah lehishaver*)। पास्टर किम इस बात पर जोर देते हैं कि इस विपत्ति को एक सक्रिय, उद्देश्यपूर्ण, लगभग व्यक्तिगत गुण के साथ चित्रित किया गया है जिसे सीधे परमेश्वर ने भेजा है।
- **जी-तोड़ पतवार चलाना (योना 1:13)**: प्रयुक्त इब्रानी क्रिया *चातार* (חָתַר) है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "खोदना" या "तोड़कर घुसना" (अन्य स्थानों पर इसका उपयोग दीवार खोदने के लिए किया गया है)।

पास्टर किम इसे लहरों में पागलों की तरह खोदने के रूप में समझाते हैं मानो बेलचे से ज़मीन खोदी जा रही हो।

- **"गाडोल" (גָּדוֹל - महान या बड़ा)**: योना की पुस्तक में बार-बार आने वाला एक संरचनात्मक विषय। परमेश्वर नीनवे के *गाडोल* (बड़े) नगर से निपटते हैं, एक *गाडोल* (बड़ा) तूफान भेजते हैं (1:4), मल्लाहों में *गाडोल* (बड़ा) भय उत्पन्न करते हैं (1:10, 1:16), और एक *गाडोल* (बड़ी) मछली ठहराते हैं (1:17)। मल्लाह बड़े तूफान के डर से निकलकर महान परमेश्वर के भय की ओर बढ़ते हैं।
- **"हे यहोवा, जैसा तूने चाहा वैसा ही किया भी है" (योना 1:14)**: इब्रानी वाक्य-विन्यास यहोवा की सार्वभौम इच्छा पर जोर देता है (כַּאֲשֶׁר חָפַצְתָּ עָשִׂיתָ, *ka'asher chafatzta asita*)। उद्धार और न्याय पूरी तरह से उनके सार्वभौम निर्णय के अधीन हैं।

#### 4. आत्मिक सत्य और अनुप्रयोग

- **अनुग्रह का चिकित्सीय दृष्टांत (दुष्प्रभाव)**: बोटोक्स (घातक बोटुलिनम टॉक्सिन से प्राप्त, पलकों की ऐंठन और भेंगापन के लिए खोजी गई) जैसी दवाएं और ओज़ेम्पिक/मौनजारो/वेगोवी जैसी मधुमेह की दवाएं अपने लाभकारी दुष्प्रभावों के कारण वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय हो गईं। इसी प्रकार, योना का विद्रोही पलायन और इस्राएल का दुखद कठोरपन अन्यजाति बाहरवालों के उद्धार का कारण बन गया (रोमियों 9–11)।
- **स्वर्ग का खोजी परमेश्वर**: परमेश्वर अपने भटकते हुए दास का अपनी गंभीर दया के साधनों से निरंतर पीछा करते हैं: तूफान, अन्यजाति कप्तान, ईश्वरीय चिट्ठियां, और मल्लाहों के तीखे प्रश्न। क्लेश परमेश्वर का वह अनुग्रह है जो झूठे आश्रयों को नष्ट करने के लिए बनाया गया है।
- **मानवीय अंतरात्मा का फंदा**: अंतरात्मा अक्सर परमेश्वर के विरुद्ध मनुष्य का अंतिम गढ़ होती है। मल्लाहों ने अपनी पूरी शक्ति से पतवार चलाई क्योंकि किसी यात्री को पानी में फेंकना उनकी नैतिक संवेदनाओं का उल्लंघन करता था। जब मानवीय अंतरात्मा ईश्वरीय प्रकाशन का न्याय करने लगती है, तो इसका परिणाम आत्मिक थकावट ("समुद्र को खोदना") होता है। हमें अपनी व्यक्तिगत नैतिकता को परमेश्वर की प्रकट इच्छा के अधीन करना चाहिए।
- **सच्ची प्रार्थना बनाम धार्मिक सौदेबाजी**: सच्ची प्रार्थना तब जन्म लेती है जब मानवीय उपाय, व्यावहारिक समझ और नैतिक प्रयास पूरी तरह समाप्त हो जाते हैं। मल्लाहों ने यहोवा को उनके वाचा के नाम से पुकारा, और पूरी तरह से उनकी सार्वभौम इच्छा के सम्मुख झुक गए: "मेरी नहीं, तेरी ही इच्छा पूरी हो।"

---

# पवित्रशास्त्र मार्गदर्शिका

## शास्त्र निर्देशिका

#### उपदेश में प्रयुक्त शास्त्रवचन

| संदर्भ | उपयोग का प्रकार | कहाँ | पास्टर किम ने इससे क्या निकाला | विश्वसनीयता |
|---|---|---|---|---|
| योना 1:4–17 | पढ़ा गया, उद्धृत किया गया, व्याख्या की गई | संपूर्ण (मुख्य पाठ) | परमेश्वर द्वारा तूफान भेजने, मल्लाहों द्वारा चिट्ठियां डालने, योना को खोजने, हताशा में पतवार चलाने, यहोवा से प्रार्थना करने, योना को पानी में फेंकने, और बलिदानों तथा मन्नतों के साथ आराधना करने का वृत्तांत। | उच्च |
| रोमियों 9–11 | संकेत किया गया, सारांश दिया गया | भाग 1 | सुसमाचार का रहस्य: इस्राएल की अवज्ञा और कठोरता ने अन्यजातियों के पहले उद्धार पाने के लिए अनुग्रह का द्वार खोल दिया, जिससे इस्राएल में ईर्ष्या उत्पन्न हो और उनका अंतिम उद्धार हो। | उच्च |
| मरकुस 4:35–41 | संकेत किया गया, अपने शब्दों में कहा गया | भाग 3 | गलील की झील पर तूफान में चेले; यीशु को जगाने से पहले अनुभवी मछुआरों ने अपनी पूरी विशेषज्ञता झोंक दी थी, जो दर्शाता है कि मानवीय कौशल परमेश्वर द्वारा ठहराए गए तूफानों को शांत नहीं कर सकता। | उच्च |
| याकूब 3:1 | उद्धृत किया गया, संकेत किया गया | भाग 5 | "तुम में से बहुत से उपदेशक न बनें"; व्यापक अनुभव या बौद्धिक आत्मविश्वास वाले लोगों को अपनी अंतरात्मा को परमेश्वर के प्रत्यक्ष प्रकाशन के अधीन करने में संघर्ष करना पड़ता है। | उच्च |
| लूका 1:38 | उद्धृत किया गया, अपने शब्दों में कहा गया | भाग 6 | स्वर्गदूत के प्रति मरियम का समर्पण ("तेरा वचन मेरे लिये पूरा हो"); परमेश्वर के असंभव और उथल-पुथल भरे बुलावे के प्रति पूर्ण समर्पण का आदर्श। | उच्च |
| योना 2:1–9 | संकेत किया गया | भाग 5 | योना 1:14 में मल्लाहों की छोटी, हताश प्रार्थना के साथ तुलना; योना तब तक प्रार्थना करने में देरी करता है जब तक कि वह बड़ी मछली के पेट में फंस नहीं जाता। | उच्च |

**आराधना सभा में अन्यत्र**

| संदर्भ | उपयोग का प्रकार | कहाँ | इससे क्या लिया गया | विश्वसनीयता |
|---|---|---|---|---|
| रोमियों 3:10–18 | हूबहू उद्धृत | प्रतिनिधि प्रार्थना (प्राचीन) | मानव की पूर्ण भ्रष्टता का अंगीकार: "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं... उनकी आंखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं।" | उच्च |

| संदर्भ | उपयोग का प्रकार | कहाँ | इससे क्या लिया गया | विश्वसनीयता |
|---|---|---|---|---|
| योना 1:15–16 | पढ़ा गया | उपदेश का निष्कर्ष / विषय परिवर्तन | बलिदान चढ़ाने और मन्नतें मानने वाले मल्लाहों के विषय को स्थापित करने के लिए स्क्रीन से पढ़ा गया। | उच्च |
| रोमियों 11:28–31 | ज़ोर से पढ़ा गया | उपदेश का निष्कर्ष | यह प्रदर्शित करने के लिए पढ़ा गया कि इस्राएल की अवज्ञा के कारण अन्यजातियों पर वाचा की दया दिखाई गई, जिससे सभी पर दया की जा सके। | उच्च |

**मुख्य पाठ की पृष्ठभूमि**

योना 1:4–17 की घटना उत्तरी इस्राएल में यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के दौरान, आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में भूमध्य सागर में घटित होती है। क्रूर नव-असीरियन राजधानी नीनवे को न्याय का संदेश सुनाने के लिए परमेश्वर द्वारा भेजे जाने पर, योना याफा बंदरगाह से पश्चिम की ओर तर्शीश को भाग गया। भूमध्य सागर अपने खतरनाक मौसमी तूफानों के लिए जाना जाता था, लेकिन पाठ विशेष रूप से इस तूफान को केवल मौसम की घटना के रूप में नहीं, बल्कि अपने भागते हुए नबी को पकड़ने के लिए यहोवा द्वारा चलाए गए एक उद्देश्यपूर्ण ईश्वरीय बाण के रूप में प्रस्तुत करता है। प्राचीन निकट पूर्व के विश्व-दृष्टिकोण में, बहुदेववादी मल्लाहों के अपने क्षेत्रीय देवता होते थे; खुले पानी पर एक अपरिहार्य तूफान का सामना करने ने समुद्र और सूखी भूमि के सृष्टिकर्ता यहोवा के सामने अन्यजाति देव-समूह की पूर्ण व्यर्थता को उजागर कर दिया।

**धर्मसैद्धांतिक अनुप्रयोग और संबंध**

पास्टर किम योना के समुद्री नाटक को रोमियों 9–11 में इस्राएल और अन्यजातियों के बारे में पौलुस के धर्मशास्त्र के साथ जोड़ते हैं। ठीक जैसे योना के हठीले विद्रोह ने अनजाने में अन्यजाति फोनीशियन या भूमध्यसागरीय मल्लाहों को यहोवा के ज्ञान और आराधना में ला खड़ा किया, वैसे ही क्रूस पर इस्राएल की ऐतिहासिक ठोकर ने अन्यजाति संसार के लिए उद्धार के द्वार खोल दिए।

पास्टर किम मल्लाहों के बीच एक आंतरिक आत्मिक प्रगति की पहचान करते हैं:

1. *स्वाभाविक प्रवृत्ति/व्यावहारिक समझ* (योना 1:4–5): माल को फेंककर और समुद्री विशेषज्ञता का उपयोग करके जीवित रहने का प्रयास करना, जो परमेश्वर द्वारा रचे गए संकट को हल नहीं कर सकता।
2. *धार्मिक सहारा* (योना 1:7): अलौकिक अप्रसन्नता का कारण जानने के लिए अन्यजाति शकुन विधियों (चिट्ठियां डालना) का उपयोग करना।
3. *प्रकाशन* (योना 1:9–10): सृष्टिकर्ता के रूप में यहोवा की पहचान सुनना और तूफान के भय से परमेश्वर के भय की ओर मुड़ना।
4. *नैतिक अंतरात्मा* (योना 1:13): नैतिक आधारों पर अधिक प्रयास करके परमेश्वर के बताए गए समाधान का विरोध करना (योना की जान बचाने के लिए जी-तोड़ पतवार चलाना)।

5. *पूर्ण समर्पण और आराधना* (योना 1:14–16): आत्मनिर्भरता छोड़ना, सीधे यहोवा से प्रार्थना करना, उनके निर्णय का पालन करना, और सच्चे बलिदानों तथा मन्नतों के साथ प्रत्युत्तर देना।

#### ध्यान देने योग्य बातें या अनिश्चितताएं

- उपदेश के दौरान भाग 2 में, पास्टर किम ने पाठ का सारांश देते समय गलती से "योना 4:17" कह दिया था, लेकिन तुरंत स्पष्ट किया कि व्याख्या योना 1:4–17 की चल रही है।
- पास्टर किम ने "जी-तोड़ पतवार चलाने" (חתר, *चातार*) के पीछे के इब्रानी मूल को रूपक के रूप में "सूखी जमीन की तरह बेलचे से समुद्र को खोदना" बताया। अनुवाद इस भाव को सटीकता से दर्शाता है।

---

## शब्द अध्ययन

### शब्द अध्ययन: परमेश्वर का निरंतर पीछा और पराए लोगों का उद्धार

### 1. חָתַר (Chatar)

- **उच्चारित रूप:** 하타르 / "땅을 판다" (ज़मीन खोदना)
- **लिप्यंतरण:** *chatar* (या *hatar*)
- **इब्रानी लिपि:** חָתַר
- **पास्टर किम द्वारा सिखाया गया अर्थ:** आर-पार खोदना, ज़मीन खोदना, या बेलचे से मिट्टी हटाना। पास्टर किम ने ध्यान दिलाया कि योना 1:13 में, इब्रानी भाषा नाव खेने के सामान्य समुद्री शब्द का उपयोग नहीं करती, बल्कि यह बताती है कि मल्लाह "समुद्र में ऐसे खोद रहे थे मानो सूखी ज़मीन खोद रहे हों।" यह परमेश्वर की धारा के विरुद्ध उनके थका देने वाले, हताश और अंततः व्यर्थ मानवीय संघर्ष को दर्शाता है।
- **शास्त्रवचन:** योना 1:13
- **खंड का शीर्षक:** सच्चे पश्चाताप और आज्ञाकारिता में प्रार्थना करने के लिए विवेक का टूटना

### 2. גָּדוֹל (Gadol)

- **उच्चारित रूप:** 가돌
- **लिप्यंतरण:** *gadol*
- **इब्रानी लिपि:** גָּדוֹל
- **पास्टर किम द्वारा सिखाया गया अर्थ:** बड़ा, विशाल, पराक्रमी। पास्टर किम ने बताया कि यह अकेला इब्रानी शब्द पूरे अध्याय को आपस में जोड़ता है: नीनवे का "बड़ा नगर" (*gadol*), समुद्र पर उठाया गया "बड़ा तूफ़ान" (*gadol*), और अंत में पद 16 में मल्लाहों का यहोवा के प्रति "बड़ा भय" (*gadol*)। यह

दिखाता है कि कैसे परमेश्वर अपने संप्रभु प्रताप के प्रति एक बड़े और पवित्र भय को जगाने के लिए बड़े संकटों का उपयोग करते हैं।

- **शास्त्रवचन:** योना 1:4, 1:12, 1:16
- **खंड का शीर्षक:** सच्चे आराधकों का जन्म और मसीह का सुसमाचार

### 3. נָדַר נֶדֶר / זָבַח זֶבַח (इब्रानी में सजातीय कर्म)

- **उच्चारित रूप:** 제물을 제물 삼고 서원을 서원했다 (बलिदान का बलिदान दिया, मन्नत की मन्नत मानी)
- **लिप्यंतरण:** *zavach zevach / nadar neder*
- **इब्रानी लिपि:** נָדַר נֶדֶר / זָבַח זֶבַח
- **पास्टर किम द्वारा सिखाया गया अर्थ:** पूर्ण संकल्प और गंभीर प्रतिबद्धता को दर्शाने के लिए क्रिया की धातु और संबंधित संज्ञा की पुनरावृत्ति। पास्टर किम ने समझाया कि चूँकि समुद्र में व्यापारिक जहाजों पर बलि के लिए सामान्य पशु नहीं होते थे, इसलिए इब्रानी भाषा की यह दोहराई गई बनावट इस बात पर बल देती है कि उन्होंने भूमि पर पहुँचने पर यहोवा को पूर्ण बलिदान चढ़ाने की दृढ़ और बाध्यकारी मन्नतें मानीं।
- **शास्त्रवचन:** योना 1:16
- **खंड का शीर्षक:** सच्चे आराधकों का जन्म और मसीह का सुसमाचार

### 4. 어부지리 (Eobujiri)

- **उच्चारित रूप:** 어부지리 (漁父之利)
- **लिप्यंतरण:** *eobujiri*
- **कोरियाई लिपि:** 어부지리
- **पास्टर किम द्वारा सिखाया गया अर्थ:** पूर्वी एशिया का एक पारंपरिक मुहावरा जो ऐसी स्थिति का वर्णन करता है जहाँ कोई तीसरा पक्ष (मछुआरा) बगुले और सीप दोनों को पकड़ लेता है, जब वे आपस में लड़ रहे होते हैं; किसी दूसरे पक्ष के विवाद से मिला अप्रत्याशित लाभ। पास्टर किम ने इस मुहावरे का उपयोग यह समझाने के लिए किया कि जब योना परमेश्वर के साथ हठपूर्ण संघर्ष में उलझा हुआ था, तब गैर-यहूदी पराए लोगों को अप्रत्याशित रूप से परमेश्वर के वाचा वाले अनुग्रह का धन कैसे प्राप्त हो गया।
- **शास्त्रवचन:** योना 1:4–17; रोमियों 11:28–31
- **खंड का शीर्षक:** सुसमाचार का विरोधाभास और गैर-यहूदियों का उद्धार

---

## स्थान और समयरेखा

### स्थान और समय-रेखा

### उल्लिखित स्थान

| नाम | जैसा सिखाया गया, वहाँ क्या हुआ | आधुनिक स्थान, यदि ज्ञात हो | संदर्भ |
|---|---|---|---|
| भूमध्य सागर | जहाँ परमेश्वर ने योना के जहाज पर भयानक तूफ़ान भेजा, मल्लाहों का सामना किया और न्याय व संरक्षण में योना को निगल लिया। | भूमध्य सागर | योना 1:4 |
| याफ़ा (संदर्भ से निहित) | बंदरगाह का नगर जहाँ से योना यहोवा के सम्मुख से भागने के लिए जहाज पर चढ़ा। | जाफ़ा / तेल अवीव, इस्राएल | योना 1:3 |
| तर्शीश (संदर्भ से निहित) | ज्ञात संसार के दूसरे छोर पर स्थित योना का गंतव्य स्थान, जहाँ वह परमेश्वर से भाग रहा था। | दक्षिणी स्पेन (संभवतः तार्तेसॉस) | योना 1:3 |
| नीनवे | अश्शूर साम्राज्य का महान नगर जिसकी दुष्टता के कारण परमेश्वर ने योना को बुलाया था, और जिसे चेतावनी देने से योना ने इनकार कर दिया था। | आधुनिक मोसुल के निकट, इराक | योना 1:2 |
| गलील की झील | जहाँ यीशु एक भयंकर तूफ़ान के दौरान सो रहे थे और चेले मछुआरों ने उन्हें जगाने से पहले अपने सारे कौशल आज़मा लिए थे। | गलील की झील (किन्नेरेत झील), इस्राएल | मरकुस 4:35–41 |

### कालक्रम और समय-रेखा

| तिथि / युग | घटना | संदर्भ |
|---|---|---|
| लगभग 8वीं शताब्दी ई.पू. (यारोबाम द्वितीय का शासनकाल) | योना उत्तरी इस्राएल में भविष्यवाणी करता है और नीनवे जाने के यहोवा के बुलावे से भागता है। | 2 राजा 14:25; योना 1:1–3 |
| लगभग 8वीं शताब्दी ई.पू. | परमेश्वर भूमध्य सागर पर तूफ़ान भेजते हैं; मूर्तिपूजक मल्लाह विश्वास लाते हैं और यहोवा की आराधना करते हैं; योना को तीन दिन और तीन रात के लिए एक बड़ी मछली निगल लेती है। | योना 1:4–17 |
| लगभग 28–30 ईस्वी | यीशु गलील की झील पर तूफ़ान को शांत करते हैं, और चेलों के डर तथा आत्म-निर्भरता को डांटते हैं। | मरकुस 4:35–41 |
| लगभग 57 ईस्वी | पौलुस रोमियों की पत्री लिखता है, और समझाता है कि इस्राएल की अंतिम परिपूर्णता से पहले, उनके ठोकर खाने से गैर-यहूदियों को उद्धार कैसे मिला। | रोमियों 9–11 |

# शिक्षा की रूपरेखा

## परमेश्वर का निरंतर पीछा और पराए लोगों का उद्धार

- **मुख्य शास्त्रवचन:** योना 1:4–17
- **मुख्य विचार:** परमेश्वर अपनी निरंतर खोज और मानवीय अनाज्ञाकारिता के बीच के टकराव का संप्रभुता से उपयोग अन्यजाति पराए लोगों को जगाने के लिए करते हैं, जिससे वे स्वाभाविक प्रवृत्तियों और धार्मिक आत्म-निर्भरता से निकलकर सच्चे विस्मय, प्रार्थना और आराधना में आ जाते हैं।

### 1. अनुग्रह का अप्रत्याशित वरदान

- **शास्त्रवचन:** योना 1:4–5, 17; रोमियों 11:28–31
- **मुख्य अंतर्दृष्टि:** चिकित्सा के इतिहास में, अप्रत्याशित दुष्प्रभावों से अक्सर जीवन बदलने वाले उपचार सामने आए हैं (जैसे बोटुलिनम टॉक्सिन का बोटोक्स बन जाना, या मधुमेह की दवा का वजन घटाने वाले उपचार में बदल जाना)। उसी तरह, जब योना हठपूर्वक परमेश्वर के बुलावे का विरोध कर रहा था, तब मूर्तिपूजक मल्लाहों को उद्धार का अप्रत्याशित लाभ मिला। जैसा कि पौलुस रोमियों 9–11 में समझाता है, इस्राएल के अस्थायी रूप से ठोकर खाने ने पहले अन्यजातियों के लिए दया का द्वार खोल दिया।
- **सहायक दृश्य (Visuals):** दृश्य 1 (शीर्षक कार्ड), दृश्य 2 (अनाज्ञाकारिता और अनुग्रह)

### 2. सामान्य समझ से वास्तविक विश्वास की ओर बढ़ना

- **शास्त्रवचन:** योना 1:4–5; मरकुस 4:35–41
- **मुख्य अंतर्दृष्टि:** परमेश्वर द्वारा भेजे गए तूफ़ान को समुद्री अनुभव या जहाज का माल फेंकने से शांत नहीं किया जा सकता था। जब विश्वासी पूरी तरह से मानवीय तर्क और पिछले प्रशिक्षण पर निर्भर होते हैं, तो उनका जीवन व्यर्थ में ही भटकता रहता है। गलील के तूफ़ान में यीशु को जगाने वाले चेलों की तरह, हमें अपने समाधान प्रस्तुत करना बंद करना होगा और विश्वास के साथ परमेश्वर के चरणों में गिरना सीखना होगा।
- **सहायक दृश्य (Visuals):** दृश्य 3 (तूफ़ान में चार प्रतिक्रियाएँ)

### 3. अंधविश्वासी धर्म से आगे बढ़ना

- **शास्त्रवचन:** योना 1:7–10
- **मुख्य अंतर्दृष्टि:** चिट्ठी डालना भाग्य जानने या अलौकिक शक्तियों को अपने वश में करने की एक प्राचीन अन्यजाति विधि थी। जब चिट्ठी योना के नाम निकली, तो उसने यहोवा को समुद्र और सूखी भूमि का सृष्टिकर्ता मानकर अंगीकार किया। मल्लाहों का भय तुरंत प्राकृतिक तूफ़ान से हटकर तूफ़ान के पीछे मौजूद संप्रभु परमेश्वर पर केंद्रित हो गया। सच्चा विश्वास परमेश्वर को केवल लाभ देने वाली शक्ति मानने से आगे बढ़कर, उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानने की ओर बढ़ता है।

- **सहायक दृश्य (Visuals):** दृश्य 3 (तूफ़ान में चार प्रतिक्रियाएँ)

### 4. सच्चे समर्पण में प्रार्थना करने के लिए विवेक का टूटना

- **शास्त्रवचन:** योना 1:12–15; लूका 1:38
- **मुख्य अंतर्दृष्टि:** जब योना को समुद्र में फेंकने के लिए कहा गया, तो मल्लाहों के नैतिक विवेक ने इसका विरोध किया, और वे पागलों की तरह नाव खेने लगे। इब्रानी शब्द *chatar* का अर्थ है कि वे सचमुच उफनते समुद्र को ऐसे खोद रहे थे मानो बेलचे से मिट्टी खोद रहे हों। आत्म-धर्मी नैतिकता अक्सर तब तक परमेश्वर के वचन का विरोध करती है जब तक कि मानवीय शक्ति समाप्त नहीं हो जाती। अपने घमंड को त्यागकर, उन्होंने अंततः यहोवा से प्रार्थना की, उनकी संप्रभुता को स्वीकार किया ("तूने जैसा चाहा, वैसा ही किया है"), और योना को जल में फेंककर आज्ञा मानी।
- **सहायक दृश्य (Visuals):** दृश्य 4 (शब्द अध्ययन: *Chatar*), दृश्य 5 (मुख्य पद: योना 1:14)

### 5. सच्चे आराधकों का जन्म

- **शास्त्रवचन:** योना 1:16; रोमियों 11:30–31
- **मुख्य अंतर्दृष्टि:** जब उफनता समुद्र शांत हो गया, तो मल्लाह यहोवा के बड़े पवित्र भय (*gadol*) से भर गए, उन्होंने गंभीर मन्नतें मानीं और बलिदान चढ़ाए। बिना किसी मंदिर या याजकीय पृष्ठभूमि वाले पराए लोग सच्चे आराधक बन गए। योना को उसके अपराध के कारण समुद्र में फेंका गया था; परन्तु यीशु मसीह परमेश्वर के अनंत क्रोध को शांत करने के लिए निष्पाप आज्ञाकारिता में स्वेच्छा से क्रूस पर गए। यीशु के कारण, हम जैसे पराए लोगों को जीवित परमेश्वर की आराधना करने के लिए निकट लाया गया है।
- **सहायक दृश्य (Visuals):** दृश्य 6 (पवित्र भय की वृद्धि: *Gadol*)

### अंतिम प्रतिवचन

प्रत्येक विश्वासी को यह पूछना चाहिए: आज मेरे हृदय के भीतरी भाग में छिपा हुआ वह हठीला, आत्म-निर्भर "योना" क्या है? अपनी मानवीय समझ, धार्मिक सौदेबाज़ी और अपनी आत्म-धर्मी नैतिकता को समुद्र में फेंक दें। संप्रभु राजा के सामने झुकें, अपनी इच्छा को समर्पित करें, और परमेश्वर के पवित्र भय में एक सच्चे आराधक के रूप में जीवन जिएँ।

---

## अध्ययन मार्गदर्शिका

### अध्ययन मार्गदर्शिका: परमेश्वर का निरंतर पीछा और पराए लोगों का उद्धार

### मूल सत्य

परमेश्वर अपनी निरंतर खोज और मानवीय अनाज्ञाकारिता के बीच के टकराव का संप्रभुता से उपयोग अन्यजाति पराए लोगों को जगाने के लिए करते हैं, जिससे वे स्वाभाविक प्रवृत्तियों और धार्मिक आत्म-निर्भरता से निकलकर सच्चे विस्मय, प्रार्थना और आराधना में आ जाते हैं।

## मुख्य पद

“तब उन्होंने यहोवा को पुकारकर कहा, “हे यहोवा हम विनती करते हैं, कि इस पुरुष के प्राण के बदले हमारा नाश न हो, और न हमें निर्दोष की हत्या का दोषी ठहरा; क्योंकि हे यहोवा, जो कुछ तेरी इच्छा थी वही तूने किया है।” (योना 1:14 · IRV)

## पृष्ठभूमि की बातें

1. **तूफ़ान की संप्रभुता (योना 1:4):** प्राचीन निकट पूर्व के समुद्री इतिहास में, तूफ़ानों के लिए अक्सर विद्रोही समुद्री देवताओं को दोषी ठहराया जाता था। यहाँ, इब्रानी पाठ में तूफ़ान का मानवीकरण इस रूप में किया गया है कि उसे किसी ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा करने के लिए सीधे यहोवा द्वारा भेजा गया था। कोई भी समुद्री कौशल या जहाज का भार हल्का करना उस तूफ़ान पर विजय नहीं पा सकता था जिसे स्वयं सृष्टिकर्ता ने बुलाया था।
2. **चिट्ठी डालना (योना 1:7):** प्राचीन संसार में, भाग्य या ईश्वरीय अप्रसन्नता को जानने के लिए अन्यजाति संस्कृतियों में चिट्ठी डालने का व्यापक प्रचलन था। यद्यपि यह अंधविश्वास में निहित था, फिर भी संप्रभु परमेश्वर ने उनके इस यांत्रिक शगुन-विचार की दिशा को ऐसे मोड़ा कि चिट्ठी अचूक रूप से योना के ही नाम निकली।
3. **समुद्र को खोदना (*Chatar*, योना 1:13):** इब्रानी क्रिया *chatar* का शाब्दिक अर्थ है मिट्टी में "खोदना" या दीवार में सेंध लगाना। लेखक इस कठोर शब्द का उपयोग मल्लाहों द्वारा की गई पागलों जैसी, थका देने वाली नाव खेने की कोशिश को दर्शाने के लिए करता है, मानो वे बेलचे से लहरों को खोद रहे हों; यह परमेश्वर के ठहराए हुए उद्देश्य के विरुद्ध संघर्ष करने वाले मानवीय प्रयासों की व्यर्थता का जीवंत चित्रण करता है।
4. **बिना वेदी के अन्यजातियों की आराधना (योना 1:16):** किसी प्राचीन इस्राएली के लिए, एक व्यापारिक जहाज के डेक पर खतनारहित मूर्तिपूजक मल्लाहों द्वारा यहोवा के पवित्र वाचा वाले नाम को पुकारना, बलिदान चढ़ाना और बाध्यकारी मन्नतें मानना अत्यंत आश्चर्यजनक बात थी। यह सुसमाचार के उस महान भेद को दर्शाता है: परमेश्वर जातियों के बीच में से सच्चे आराधक उत्पन्न करते हैं।

## चर्चा के लिए प्रश्न

1. **वचन को समझना:** जब तूफ़ान आया, तो मल्लाहों ने सबसे पहले खुद को बचाने के लिए क्या किया, और उनके समुद्री अनुभव की सामान्य समझ क्यों विफल हो गई (योना 1:5)?
2. **प्रतिक्रियाओं की जाँच:** योना 1:13 को देखें। योना के निर्देशों का तुरंत पालन करने के बजाय चालक दल ने पागलों की तरह नाव क्यों खेई? किसी व्यक्ति का गलत दिशा में बना विवेक या नैतिक आत्म-धार्मिकता वास्तव में हमें परमेश्वर के वचन का पालन करने से कैसे रोक सकती है?

3. **परमेश्वर के स्वभाव को खोजना:** पद 14 में मल्लाहों की प्रार्थना की तुलना जहाज में योना की चुप्पी से करें। मल्लाहों का यह अंगीकार कि "तूने जैसा चाहा, वैसा ही किया है," हमें बाइबलीय प्रार्थना और समर्पण के बारे में क्या सिखाता है?
4. **मसीह से संबंध जोड़ना:** योना का समुद्र में फेंका जाना किस प्रकार यीशु मसीह को पहले से दर्शाता है, और यीशु का स्वेच्छा से दिया गया निष्पाप बलिदान, योना के अनिच्छा से जल में जाने से किस प्रकार श्रेष्ठ है?
5. **व्यक्तिगत लागूकरण:** वह कौन सा "योना" है जो वर्तमान में आपके हृदय के भीतरी भाग में छिपा हुआ है (जैसे हठपूर्ण आत्म-निर्भरता, कड़वाहट, भविष्य का डर, या नैतिक घमंड)? परमेश्वर इस सप्ताह आपसे समर्पण का कौन सा विशिष्ट कदम उठाने के लिए कह रहे हैं?

### फ़ोन के लिए सारांश (WhatsApp)

परमेश्वर ने अन्यजाति मल्लाहों को उद्धारकारी विश्वास में लाने के लिए योना के हठीले विद्रोह का उपयोग किया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि उनकी दया सबसे अप्रत्याशित पराए लोगों तक भी पहुँचती है। जब मानवीय समझ और नैतिक प्रयास विफल हो जाते हैं, तब सच्चा विश्राम केवल तभी आता है जब हम अपने घमंड को त्यागकर परमेश्वर की संप्रभु इच्छा पर भरोसा करते हैं। आज आपको अपने किस छिपे हुए घमंड को जहाज से बाहर फेंकने की आवश्यकता है? *मुख्य पद: "हे यहोवा, तूने जैसा चाहा, वैसा ही किया है।" (योना 1:14)*

---

## प्रार्थना

### “परमेश्वर का निरंतर पीछा करने वाला प्रेम और अन्यजातियों का उद्धार” के साथ एक प्रार्थना

*योना 1:4-17*

हे यहोवा हमारे परमेश्वर, आप स्वर्ग के परमेश्वर हैं,
जिसने समुद्र और सूखी भूमि को बनाया है।
आप हर आँधी के पीछे खड़े हैं और उफनती लहरों पर शासन करते हैं।
आप एक पवित्र उद्देश्य से प्रचंड आँधी भेजते हैं,
और अपनी इच्छा से भयानक समुद्र को शांत कर देते हैं।
आप नीनवे से भी महान हैं,
हर बुराई से बढ़कर हैं,
और हमारे सबसे गहरे विस्मय और भक्तिमय भय के योग्य हैं।

आपका प्रेम अटल और निरंतर बना रहने वाला है,
जो भटकते हुए पापियों का अनुग्रह के साथ तब तक पीछा करता है जब तक उन्हें पा न ले।
जब संयोग पर संयोग जुड़ते चले जाते हैं,
तो वास्तव में वह आपका विधान होता है जो हमें वापस बुला रहा होता है।
आपका वचन अथाह और मधुर है,

एक ऐसा दर्पण जो हमें हमारा पाप दिखाता है
और एक ऐसी खिड़की जो हमें आपका अनुग्रह दिखाती है।
उद्धार और न्याय आप ही के हाथ में हैं,
क्योंकि केवल आप ही वह प्रभु हैं जो अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ करते हैं।

हे पिता, हमें क्षमा करें कि हम योना की तरह आपसे दूर भागते रहे,
सुरक्षित ठिकानों में छिपते रहे और धार्मिक घमंड की नींद में सोते रहे।
हम अपने होठों से तो आपका भय मानने का दावा करते हैं,
परंतु बीमारी, पैसे, भविष्य और लोगों के सामने काँप जाते हैं।
संकट के समय हम अपनी ही समझ पर भरोसा करते हैं,
जहाज का सामान तो बाहर फेंक देते हैं, पर अपने भीतर छिपे लालच और स्व-धार्मिकता को दबाए रखते हैं।
हम अपने विवेक को आपके वचन से ऊपर रखते हैं
और आपकी इच्छा के विरुद्ध व्यर्थ ही डाँड़ चलाते रहते हैं।
मसीह में हम पर दया करें।

हम सुसमाचार के भेद के लिए आपका धन्यवाद करते हैं,
कि इस्राएल की आज्ञा न मानने के द्वारा आपने हम जैसे बाहरवालों पर दया की,
और यीशु मसीह की सर्वोच्च आज्ञाकारिता के द्वारा
आपने हमें और भी महान उद्धार दिया।
उस आँधी के अनुग्रह के लिए धन्यवाद जो हमारे अपने रास्तों को रोक देती है,
और हमें मूर्तियों से फिराकर आपको अपना पिता पुकारने की ओर मोड़ देती है।

हमें सिखाएँ कि जब कठिनाई आए, तो हम आपके सामने गिर पड़ें
और उत्तर की जगह खाली छोड़ दें ताकि आप स्वयं उसे लिखें।
हमारे भीतर के योना को,
अर्थात् हमारी बँधी-बँधाई धारणाओं, आत्म-निर्भरता और घमंड को बाहर फेंकने में हमारी सहायता करें,
ताकि आप हमारी संतुष्टि, आनंद, आशा और सामर्थ्य बनकर हमें भर दें।
हमारी कलीसिया और हमारे पड़ोसियों को ऐसे सच्चे आराधक बनाएँ जो केवल आपका भय मानते हों,
और सब जातियों तथा इस्राएल को अपने पूर्ण राज्य में ले आएँ।

हे प्रभु, हम यहाँ उपस्थित हैं।
हम अपने हाथ खड़े करते हैं और अपने रास्ते आपके हाथों में सौंप देते हैं।
मरियम के साथ हम कहते हैं, हमारे जीवन में आपका वचन पूरा हो,
और यीशु के साथ हम प्रार्थना करते हैं, हमारी नहीं, परंतु आपकी इच्छा पूरी हो।
खाने-पीने, बोलने-चालने और प्रतिदिन के जीवन में,
हम अपने आप को स्तुति के एक जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करते हैं।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा,
जिनकी आपके साथ सदा सर्वदा महिमा और स्तुति होती रहे।

आमीन।

**आशीष**

वह परमेश्वर जिसके वरदान और बुलाहट कभी टल नहीं सकते,
आपको उस दया में स्थिर रखे जो आपने मसीह यीशु में पाई है,
और जब तक उसका राज्य अपनी पूर्णता में न आ जाए, तब तक आनंद भरी आज्ञाकारिता और भक्तिमय भय में आपकी अगुवाई करता रहे।
आमीन।[1]

---

*[1] रोमियों 11:29-31 पर आधारित।*

*इस प्रार्थना के पीछे के वचन: योना 1:4-17; रोमियों 11:28-31; मरकुस 4:37-41; लूका 1:38; लूका 22:42; रोमियों 12:1; याकूब 3:1।*

*पास्टर हून किम के उपदेश के साथ, AI की सहायता से लिखी गई एक प्रार्थना। ये उनके अपने शब्द नहीं हैं। पूरी जाँच से पहले 11 नवंबर 2026 को साझा किया गया।*

---

# दोहराने के प्रश्न

## पुनरीक्षण प्रश्नोत्तरी: स्वर्ग का खोजी परमेश्वर और अन्यजातियों का उद्धार

### प्रश्न

1. आरम्भिक उदाहरण में, पास्टर किम ने किन चिकित्सीय उपचारों का उल्लेख अप्रत्याशित दुष्प्रभावों के रूप में किया जिनसे मानवता को बड़ा लाभ हुआ? क) पेनिसिलिन और एस्पिरिन ख) बोटॉक्स, वेगोवी, और मौनजारो ग) मॉर्फिन और इंसुलिन घ) पोलियो और मलेरिया के टीके

1. पास्टर किम ने दो पक्षों के बीच के विवाद से किसी अप्रत्याशित तीसरे पक्ष को लाभ मिलने का वर्णन करने के लिए किस कोरियाई चार-अक्षरीय मुहावरे (*고사성어*) का उपयोग किया? क) *बेकमी* (백미) ख) *दोंगमुनसोदाप* (동문서답) ग) *ओबुजिरी* (어부지리) घ) *गोजिन-गामरे* (고진감래)

1. पास्टर किम के अनुसार, परमेश्वर और योना के बीच का संघर्ष रोमियों 9–11 में पौलुस द्वारा वर्णित सुसमाचार के भेद को कैसे दर्शाता है?

1. योना 1:4–5 में, जहाज का माल समुद्र में फेंकने पर भी तूफान शांत क्यों नहीं हो सका? क) माल इतना हल्का था कि कोई फ़र्क नहीं पड़ा ख) मल्लाहों ने उसे पर्याप्त दूरी तक नहीं फेंका ग) तूफान परमेश्वर द्वारा एक ईश्वरीय उद्देश्य के साथ भेजा गया था, और वास्तविक समस्या जहाज के निचले भाग में पड़ा योना था घ) कप्तान जहाज को मोड़ना भूल गया था

1. पास्टर किम योना 1 में मल्लाहों के कार्यों की तुलना मरकुस 4 में गलील की झील पर चेलों के साथ कैसे करते हैं?

1. योना 1:7 में, जब मल्लाहों के सामान्य ज्ञान के प्रयास विफल हो गए, तब उन्होंने क्या किया? क) उन्होंने जहाज को वापस याफ़ा की ओर मोड़ दिया ख) उन्होंने यह जानने के लिए चिट्ठियाँ डालीं कि यह विपत्ति किस पर आई है ग) उन्होंने योना को मस्तूल से बाँध दिया घ) उन्होंने जहाज का लंगर डाल दिया

1. योना 1:13 में मल्लाहों के डाँड़ चलाने का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त इब्रानी क्रिया *चातार* (חָתַר) का शाब्दिक अर्थ क्या है? क) उकाब की तरह उड़ना ख) ज़मीन खोदना या मिट्टी हटाना ग) डर से चीखना घ) बिना पतवार के बहना

1. योना 1:14 में, मल्लाहों की प्रार्थना ने कैसे दिखाया कि वे यहोवा को प्राचीन काल के किसी ऐसे अन्यजाति तूफ़ान-देवता के रूप में नहीं देखते थे जो नरबलि माँगता है?

1. कौन-सा इब्रानी शब्द जिसका अर्थ "महान" या "बड़ा" है, पूरे योना के पहले अध्याय में बार-बार आता है, जो नगर, तूफान, और मल्लाहों के भय को आपस में जोड़ता है? क) *शालोम* ख) *हेसेद* ग) *गाडोल* घ) *कादोश*

1. उपदेश के अनुसार, योना के समुद्र में डाले जाने और क्रूस पर यीशु मसीह के बलिदान के बीच सबसे बड़ा अंतर क्या है?

---

## उत्तर कुंजी

1. **ख) बोटॉक्स, वेगोवी, और मौनजारो।** (भाग: सुसमाचार का विरोधाभास और अन्यजातियों का उद्धार)
2. **ग) *ओबुजिरी* (어부지리)।** (भाग: सुसमाचार का विरोधाभास और अन्यजातियों का उद्धार)
3. **संक्षिप्त उत्तर:** इस्राएल की हठधर्मिता और अनाज्ञाकारिता के कारण अनुग्रह का सुसमाचार पहले अन्यजाति परदेसियों तक पहुँच गया। जब अन्यजातियों की पूरी संख्या आ जाएगी, तब अंत के दिनों में इस्राएल में जलन पैदा होगी और वह परमेश्वर की ओर फिरेगा। (भाग: सुसमाचार का विरोधाभास और अन्यजातियों का उद्धार)
4. **ग) तूफान परमेश्वर द्वारा एक ईश्वरीय उद्देश्य के साथ भेजा गया था, और वास्तविक समस्या जहाज के निचले भाग में पड़ा योना था।** (भाग: सामान्य ज्ञान की प्रतिक्रियाओं से विश्वास की ओर बढ़ना)
5. **संक्षिप्त उत्तर:** दोनों ही परिस्थितियों में, अनुभवी नाविकों ने (योना की पुस्तक में व्यापारिक मल्लाहों ने, और मरकुस 4 में पतरस, याकूब, और यूहन्ना जैसे जीवन भर मछली पकड़ने वालों ने) तूफान पर काबू पाने के लिए अपने मानवीय ज्ञान और सामर्थ्य का पूरा उपयोग कर डाला, और अंततः यह समझकर प्रभु की ओर फिरे कि वे पूरी तरह असहाय हैं। (भाग: सामान्य ज्ञान की प्रतिक्रियाओं से विश्वास की ओर बढ़ना)
6. **ख) उन्होंने यह जानने के लिए चिट्ठियाँ डालीं कि यह विपत्ति किस पर आई है।** (भाग: सच्चे परमेश्वर को जानने के लिए धार्मिक प्रतिक्रियाओं से आगे बढ़ना)

7. **ख) ज़मीन खोदना या मिट्टी हटाना।** (भाग: सच्चे पश्चाताप और आज्ञाकारिता में प्रार्थना करने के लिए विवेक का टूटना)
8. **संक्षिप्त उत्तर:** उन्होंने परमेश्वर से विनती की कि वह उन्हें निर्दोष के लहू का दोषी न ठहराए, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि वे योना को समुद्र में फेंकने को किसी रक्तपिपासु देवता को शांत करने की अन्यजाति प्रथा नहीं मान रहे थे, बल्कि यहोवा की प्रभुता संपन्न आज्ञा के सम्मुख झुक रहे थे। (भाग: सच्चे समर्पण में सर्वसत्ताधारी परमेश्वर को पुकारना)
9. **ग) *गाडोल*।** (भाग: सच्चे आराधकों का जन्म और मसीह का सुसमाचार)
10. **संक्षिप्त उत्तर:** योना को उसके अपने दोष, विद्रोह, और स्व-धार्मिक निराशा के कारण उफनते समुद्र में फेंका गया था; जबकि यीशु मसीह पापियों के बदले परमेश्वर के अनन्त क्रोध को सहने और उसे शांत करने के लिए सिद्ध, निष्पाप आज्ञाकारिता में स्वेच्छा से क्रूस पर गए। (भाग: सच्चे आराधकों का जन्म और मसीह का सुसमाचार)

---

# तीन मिनट में

## तीन मिनट में उपदेश

योना पहले अध्याय, वचन चार से सत्रह तक आधारित, "स्वर्ग का खोजी परमेश्वर और अन्यजातियों का उद्धार" शीर्षक वाले इस उपदेश में N.E.W. Church के पास्टर हून किम परमेश्वर के उद्धारकारी अनुग्रह के अद्भुत भेद को स्पष्ट करते हैं। पास्टर किम इस बात से आरम्भ करते हैं कि चिकित्सा के इतिहास में, अनपेक्षित दुष्प्रभाव अक्सर असाधारण वरदान सिद्ध होते हैं। उदाहरण के लिए, बोटुलिनम टॉक्सिन का उपयोग मूल रूप से आँखों की ऐंठन के इलाज के लिए किया जाता था, परंतु डॉक्टरों ने जल्द ही देखा कि इसने चेहरे की झुर्रियों को मिटा दिया, जिससे बोटॉक्स के रूप में एक अत्यंत प्रसिद्ध उपचार सामने आया। इसी तरह, मधुमेह के लिए बनाई गई दवाएँ आश्चर्यजनक रूप से वजन घटाने में सहायक सिद्ध हुईं। ठीक इसी प्रकार, हमारे उद्धार में भी एक अप्रत्याशित आशीष समाई हुई है। योना हठपूर्वक परमेश्वर से दूर भाग रहा था, फिर भी पीछा करने वाले परमेश्वर और एक अनाज्ञाकारी नबी के बीच के उस टकराव का परिणाम यह हुआ कि अन्यजाति मूर्तिपूजक मल्लाहों ने सत्य को सुना और उद्धार पाया। जैसा कि प्रेरित पौलुस रोमियों नौ से ग्यारह अध्यायों में समझाते हैं, इस्राएल की अनाज्ञाकारिता ने अन्यजातियों के लिए पहले दया पाने का द्वार खोल दिया। पूरे तूफान के दौरान, परमेश्वर ने स्वर्ग के एक खोजी की तरह लगातार योना का पीछा किया, परंतु वास्तव में अन्यजाति मल्लाहों ने प्रतिक्रिया दी। पहले तो उन्होंने मानवीय सामान्य ज्ञान से काम लिया और जहाज के माल को समुद्र में फेंक दिया, जबकि योना जहाज के निचले भाग में सो रहा था। जब हमारा सामान्य अनुभव और सामर्थ्य तूफान को शांत नहीं कर पाते, तब परमेश्वर हमें दिखाते हैं कि मूल समस्या आत्मिक है और हम इसे अपने बल पर हल नहीं कर सकते। इसके बाद, मल्लाह अंधविश्वासी धर्म से आगे बढ़े। जब योना ने प्रभु की पहचान स्वर्ग के परमेश्वर के रूप में कराई जिसने समुद्र और सूखी भूमि को बनाया, तब उनका डर प्राकृतिक तूफान से हटकर उस भययोग्य सृष्टिकर्ता की ओर मुड़ गया जो उस पर शासन करता है। फिर भी, उन्होंने पागलों की तरह नाव को किनारे की ओर ले जाने का प्रयास किया, और अपने ही विवेक तथा मानवीय तर्क को परमेश्वर के प्रकाशन का विरोध करने दिया। केवल तब जब उनका पूरा बल

समाप्त हो गया, उन्होंने आत्मसमर्पण किया। उन्होंने सीधे प्रभु को पुकारा, और यह अंगीकार किया कि वही अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ करता है। आज्ञाकारिता में योना को समुद्र में फेंककर, उन्होंने अपना नियंत्रण छोड़ दिया, समुद्र शांत हो गया, और वे ऐसे सच्चे आराधक बन गए जो यहोवा का बहुत भय मानते थे, और उन्होंने बलिदान चढ़ाए और मन्नतें मानीं। पास्टर किम हमें स्मरण दिलाते हैं कि सच्चे विश्वास के लिए हमारे हृदयों में छिपे घमंड और आत्मनिर्भरता के उस हठीले योना को बाहर फेंकना आवश्यक है। यीशु मसीह की आज्ञाकारिता के कारण, हमें उन मल्लाहों से भी बड़ा अनुग्रह प्राप्त हुआ है। आइए हम अपने विचारों को छोड़ दें, परमेश्वर की संप्रभु इच्छा के सम्मुख समर्पण करें, और अपना पूरा जीवन आभारी स्तुति के एक भेंट के रूप में जिएँ।

---

# एक सप्ताह के WhatsApp संदेश

## पहला दिन

**योना 1:4-5**

परमेश्वर ने एक ऐसा तूफान भेजा जिसे सामान्य ज्ञान या मानवीय कौशल से शांत नहीं किया जा सकता था। मल्लाहों ने माल को समुद्र में फेंक दिया, परंतु तूफान थमा नहीं क्योंकि मूल समस्या जहाज के निचले भाग में सो रही थी। जब हमारे सामान्य उपाय विफल हो जाते हैं, तब परमेश्वर हमें स्वयं पर निर्भर रहना छोड़कर उनके उद्देश्य को खोजने के लिए बुला रहे होते हैं।

*प्रश्न:* आज आपको किन आत्मनिर्भर तरीकों पर भरोसा करना बंद करने की आवश्यकता है?

## दूसरा दिन

**योना 1:7-9**

जब मल्लाहों ने समझ लिया कि मानवीय कौशल उन्हें नहीं बचा सकता, तब उन्होंने चिट्ठियाँ डालीं और उस प्रभु के बारे में जाना जिसने समुद्र और सूखी भूमि को बनाया है। उनका भय तूफ़ान से हटकर उस सर्वोपरि परमेश्वर की ओर मुड़ गया जो उस पर शासन करता है। जीवित परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना, अपनी समस्याओं से केवल छुटकारा पाने की तुलना में कहीं अधिक महान है।

*प्रश्न:* क्या आपका ध्यान अपने तूफान से बचने पर अधिक है या इसके माध्यम से परमेश्वर को जानने पर?

## तीसरा दिन

**योना 1:13**

योना द्वारा उपाय बताए जाने के बाद भी, मल्लाह पागलों की तरह नाव को किनारे की ओर ले जाने का प्रयास करते रहे क्योंकि उनका विवेक उनसे कह रहा था कि किसी मनुष्य को समुद्र में न फेंकें। एक अप्रशिक्षित विवेक मानवीय मानकों को परमेश्वर के वचन से ऊपर रख सकता है और उनकी इच्छा के विरुद्ध लड़ सकता है। अपनी धार्मिकता के भाव पर निर्भर रहना हमें सच्चे विश्वास से दूर रखता है।

*प्रश्न:* आप कहाँ परमेश्वर के वचन का विरोध कर रहे हैं क्योंकि वह आपके अपने विचारों से टकराता है?

## चौथा दिन

**योना 1:14**

थककर चूर हो जाने और किनारे तक न पहुँच पाने पर, मल्लाहों ने अंततः सच्चे मन से सीधे प्रभु को पुकारा। उन्होंने अपने तौर-तरीकों को त्याग दिया और यह स्वीकार किया कि परमेश्वर ही अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ करता है। सच्ची प्रार्थना तब आरम्भ होती है जब हमारी अपनी योजनाएँ पूरी तरह विफल हो जाती हैं और हम पूर्णतः परमेश्वर की संप्रभु इच्छा के सम्मुख झुक जाते हैं।

*प्रश्न:* इस सप्ताह प्रार्थना में आप अपनी योजनाओं को परमेश्वर की इच्छा के सम्मुख कैसे समर्पित कर सकते हैं?

## पांचवां दिन

**योना 1:15-16**

मल्लाहों ने अपने मानवीय तर्कों को एक ओर रख दिया, योना को समुद्र में फेंककर परमेश्वर के वचन का पालन किया, और तूफान थम गया। इस ईश्वरीय कार्य को देखकर, वे यहोवा से अत्यंत भयभीत हुए, उन्होंने बलिदान चढ़ाए और गंभीर मन्नतें मानीं। जब हम अपनी मनमानी को निकाल फेंकते हैं और परमेश्वर के अधीन हो जाते हैं, तब हमारा जीवन सच्ची आराधना बन जाता है।

*प्रश्न:* परमेश्वर का आदर करने के लिए आपको अपने भीतर के किस घमंड या मनमानी को बाहर निकालने की आवश्यकता है?

पवित्रशास्त्र के उद्धरण: इंडियन रिवाइज्ड वर्ज़न (IRV) हिंदी, कॉपीराइट © 2017, 2018, 2019 ब्रिज कनेक्टिविटी सॉल्यूशंस, क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरअलाइक 4.0 लाइसेंस (CC BY-SA 4.0) के अंतर्गत, eBible.org से। Scripture quotations: Indian Revised Version (IRV) Hindi, Copyright © 2017, 2018, 2019 by Bridge Connectivity Solutions, used under the Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 license (CC BY-SA 4.0), from eBible.org.